डॉ० संतोष कुमार, सहायक प्राचार्य, हिन्दी विभाग
भारती मंडन महाविद्यालय, रहिका, मधुबनी
दिनांक : 27/03/2021

पत्र : अष्टम / साहित्य सिद्धांत एवं हिन्दी आलोचना

काव्य हेतु का स्वरूप :-

विभिन्न आचार्यों ने काव्य हेतु को अपने प्रकार से व्यक्त किया। लेकिन उनके स्वरूप पर प्रायः सभी एक मत रहे या उसके अन्य उपरूपों की व्याख्या कर उसके विस्तार से चर्चा की।

काव्य हेतु के तीन स्वरूप हैं :—

1) प्रतिभा :- काव्य हेतु का मूलाधार प्रतिभा है जो किसी व्यक्ति में काव्य रचना शक्ति को जन्म देती है। यह एक ईश्वर प्रदत्त शक्ति है जो एक नवनवोन्मेषशालिनी प्रज्ञा है। प्रतिभा के बल पर ही कवि अपूर्व शब्दों, अपूर्व भावों, अलंकारों, उक्ति वैचित्र्य आदि का विधान करता है।

प्रतिभा दो प्रकार की होती है :—

1) कारयित्री प्रतिभा 2) भावयित्री प्रतिभा

कारयित्री प्रतिभा वह होती है, जो जन्मजात होता है। जिसके बल पर कवि कविता लिखता है। वहीं दूसरी तरफ भावयित्री प्रतिभा वह होती है जिसके बल पर कोई पाठक कविता को समझता है।

सभी आचार्यों ने काव्य हेतु में प्रतिभा के महत्व को स्वीकारा है और इसे काव्य का मूल हेतु माना है।

डॉ नगेन्द्र ने प्रतिभा को असाधारण कोटि की मेधा मानते हुए कहा है कि प्रतिभा को नीरस और साधारण वातावरण अच्छे नहीं लगते हैं। वह असाधारणता में खुलकर खेलती है।

2) व्युत्पत्ति :- व्युत्पत्ति शब्द का शाब्दिक अर्थ है निपुणता, पांडित्य या विद्वता। ज्ञान की उपलब्धि को भी व्युत्पत्ति कहा गया है। यह ज्ञानोपलब्धि शास्त्रों

के अध्ययन और लोक व्यवहार के अवेक्षण से होती है, विद्वानों का मत है कि साहित्य के गहन चिंतन-मनन से कवि की उक्ति में सौन्दर्य का समावेश हो जाता है और उसकी रचना सुव्यवस्थित हो जाती है।

व्युत्पत्ति दो प्रकार के है — क) शास्त्रीय ख) लौकिक।

शास्त्रीय व्युत्पत्ति शास्त्रों के अध्ययन से तथा लौकिक उत्पत्ति लोक के निरीक्षण से उत्पन्न होती है। प्रथम प्रकार की व्युत्पत्ति लोक से जहाँ काव्य में सौन्दर्य एवं व्यवस्था का समावेश होता है वहीं लौकिक व्युत्पत्ति से विषय की सम्यक् प्रस्तुती संभव होती है। कवि की अभिव्यक्ति दोषरहित, मार्मिक एवं प्रभावकारी तभी होती है जब वह लोक एवं शास्त्र की व्युत्पत्ति से युक्त हो।

लोक और शास्त्र का अध्ययन कवि को त्रुटियों से बचाता है।

3) अभ्यास :— काव्य निर्माण का तीसरा हेतु अभ्यास है। भामह ने लिखा है कि शब्दार्थ के स्वरूप का ज्ञान करके सतत अभ्यास द्वारा उसकी उपासना करनी चाहिए, साथ ही अन्य कवियों की कृतियों का भी अध्ययन करते रहना चाहिए। जिससे अभ्यास नित्य-प्रति दृढ़ होता जाए।

आचार्य वामन ने भी अभ्यास को महत्व देते हुए लिखा है — 'अभ्यासोहि कर्मसु कौशलं भावइति।' अर्थात् अभ्यास के द्वारा ही कवि कर्म में कुशलता प्राप्त की जा सकती है।

आचार्य दण्डी ने तो अभ्यास को ही काव्य का मुख्य हेतु माना है। वे कहते हैं प्रतिभा और व्युत्पत्ति के अभाव में केवल अभ्यास से ही काव्य रचना संभव है।

~~आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के अनुसार —~~
~~"कवि के लिए किसिक बक्त की सबसे अधिक जरूरत होती है। कस~~